संपादक का नोट

सभी को प्रभु की स्तुति हो!

14 जुलाई 2023 को, हम रोज़ ऑफ़ शेरोन चर्च, कलिना के 19 साल पूरे होने का जश्न मना रहे हैं। वर्षों से, हमारे अच्छे प्रभु, अपनी बुलाहट के प्रति सच्चे, कई अकल्पनीय तरीकों से मेरे प्रति दयालु और विश्वासयोग्य रहे हैं। मैं हमेशा अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह का मुझ पर और मेरे सभी रोज़ ऑफ़ शेरोन चर्च के सदस्यों पर उनके अनुग्रह के लिए बहुत आभारी हूं। धन्यवाद यीशु!

यूहन्ना 14:6 ''यीशु ने उससे कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।'' यीशु ने यह बात अपने चेलों से कही थी, और वे जानते थे कि यीशु के बिना वे कुछ भी नहीं कर सकते। यह आज के समय में भी सच है, क्योंकि यीशु के बिना हम पिता तक नहीं पहुंच सकते, क्योंकि पिता तक जाने का रास्ता केवल यीशु के माध्यम से है।

पर्वत पर प्रार्थना करते हुए, पिता परमेश्वर ने यीशु को बताया कि उसके शिष्य एक तूफान में फंस गए थे। नाव में सवार सभी शिष्य अनुभवी नाविक थे, लेकिन क्या वे तूफान को रोक पाए? नहीं, क्योंकि 'तूफान' उनके वश में नहीं था। उसी तरह, आज हम अपने परिवार या आत्मारिक जीवन के सभी पहलुओं में अनुभवी हो सकते हैं, लेकिन क्या हम अपने जीवन में किसी 'तूफान' को रोक सकते हैं? नहीं, हमारे मानवीय ज्ञान के साथ, हम अपने जीवन में किसी भी 'तूफान' को नहीं रोक सकते हैं, लेकिन अगर यीशु हमारे साथ हैं, तो वह अकेले ही हमारे परीक्षण और क्लेश के समय में हमारा बचाव कर सकते हैं।

यीशु ने पहले ही कह दिया है *यूहन्ना 15:4–5* में *''तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में। जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।''* आज भी हमारे जीवन में कोई भी 'तूफान' प्रभु की कृपा के बिना नहीं बंध सकता। वह अकेले ही हमें हमारे जीवन में सभी प्रकार के 'तूफानों' से बचा सकते हैं। चेले जानते थे कि वे यीशु मसीह के बिना कुछ नहीं कर सकते। इसी तरह, आज, हमें भी यीशु के वचनों पर भरोसा और विश्वास करना चाहिए, और घोषणा करनी चाहिए, *'हाँ! यीशु के बिना, हम कुछ नहीं कर सकते!'* जब हम यीशु के साथ होंगे, तभी हमारा जीवन सुरक्षित और समृद्ध होगा।

मत्ती 14:28–29 ''पतरस ने उसको उत्तर दिया, "हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे।" उसने कहा, "आ!" तब पतरस नाव पर से उतरकर यीशु के

पास जाने को पानी पर चलने लगा।'' पतरस यीशु से बहुत प्रेम करता था, और यद्यपि वह तूफान से डरता था, वह तुरन्त नाव से कूद गया और यीशु की ओर पानी पर चलने लगा। क्यों? पतरस को पूरा 'भरोसा' था, कि अगर यीशु ने उसे बुलाया, तो वह उसको संभालेगा। इसलिए, एक व्यक्ति जो तूफान से बहुत डर गया था, यीशु की आवाज सुनकर, आँख बंद करके पानी पर चला गया, यह जानकर कि जिसने उसे बुलाया है वह विश्वासयोग्य है, और उसको संभालेगा। परमेश्वर का वचन कहता है, *'जहाँ कहीं प्रभु का आत्मा है वहाँ स्वतंत्रता है।'*

इसलिए प्यारे भाइयों और बहनों, इस दुनिया में, हम तूफान में कई आवाजें सुनते हैं, लेकिन इन सब में, हमें परमेश्वर की सच्ची आवाज को सुनना, उसका पालन करना और उस पर भरोसा करना सीखना चाहिए; क्योंकि केवल जब हम परमेश्वर की आवाज सुनते हैं, तब हम इस संसार के तूफानों में नहीं डूबेंगे!

हमारे अच्छे प्रभु आपका और आपके परिवार के सभी सदस्यों का मार्गदर्शन और देखभाल करते रहें। प्रभु की स्तुति हो!

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

भजन संहिता 121:1–2 ''मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर लगाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी? मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।''

पवित्र शास्त्र में 150 भजन संहिता हैं, और इनमें से 3 भजन संहिता हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण हैं।

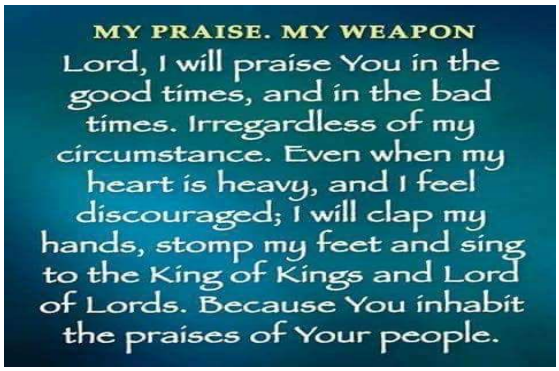

भजन संहिता 23:1 ''यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।''

भजन संहिता 91:1 ''जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।''

सभी 3 भजन संहिता (भजन संहिता 23, 91, 121) हमें प्रभु की छाया और प्रेम के अधीन रहना सिखाते हैं और स्तुति के भजन हैं। इस्राएली नियमित रूप से जैतून के पहाड़ पर इकट्ठा होते थे, और पहाड़ पर चढ़ते समय, लोग स्तुति के इन भजनों को गाते थे। यहाँ तक कि भजन संहिता 122 और 124 को भी यहोवा की स्तुति और आराधना के रूप में गाया जाता था। इससे यहूदा के लोगों में बहुत आनन्द आया।

एक समय पर, राजा हिजकिय्याह बहुत बीमार था, और परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता यशायाह को सलाह देने और उसे चंगा करने के लिए भेजा। राजा हिजकिय्याह ने अपने पापपूर्ण तरीकों को स्वीकार करते हुए पश्चाताप किया, और परमेश्वर ने उस पर दया की और उसे चंगा किया, उसके जीवन को और 15 वर्षों के लिए बढ़ा दिया। उस समय राजा हिजकिय्याह स्तुति के इन्हीं भजनों को गाता हुआ जैतून पहाड़ के मन्दिर में गया। जब कोई व्यक्ति बीमारी से ठीक हो जाता है, तो वह बहुत कमजोर हो जाता है और चल नहीं सकता। परन्तु राजा हिजकिय्याह ने यहोवा से

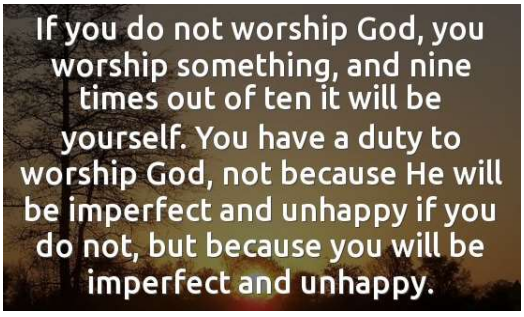

बल पाया, और यहोवा के लिये जयजयकार करते हुए जैतून के पहाड़ पर चढ़ सका। स्तुति और आराधना गाकर उसने प्रभु से शक्ति और सामर्थ प्राप्त की। निश्चय ही, हमें सहायता परमेश्वर की ओर से मिलती है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया है। हमें अपना ध्यान हमेशा उन पर्वतों पर रखना चाहिए जहां से हमें मदद मिलती है, क्योंकि हम वहां से अपनी शक्ति, सामर्थ और प्रेम प्राप्त कर सकते हैं। भजन संहिता 121:1–2 ''मैं अपनी आँखें पर्वतों की ओर लगाऊँगा। मुझे सहायता कहाँ से मिलेगी? मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।''

जबकि हमारा ध्यान सदैव पर्वतों पर ही रहना चाहिए, स्वर्ग और पृथ्वी बनाने वाले प्रभु परमेश्वर की सहायता जहाँ से आती है, शत्रु हमेशा हमें विचलित करके हमारा ध्यान जमीन पर खींचने की कोशिश करेगा। शैतान हमसे हमारी आशीषों को छीन लेना चाहता है, लेकिन जब तक हमारा ध्यान पर्वतों पर रहेगा तब तक वह हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। हालाँकि, जिस क्षण हमारा ध्यान पर्वतों से हटेगा, वह हमला करेगा और हमें कमजोर करेगा।

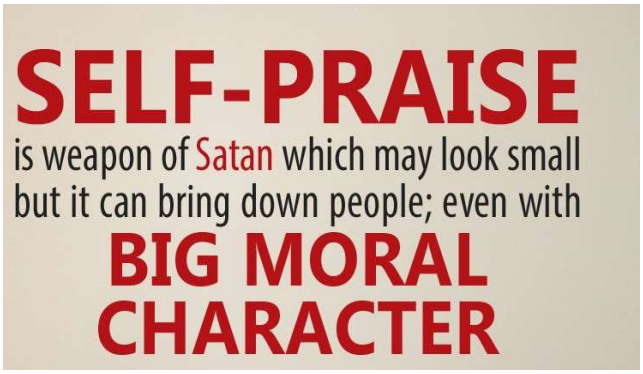

राजा दाऊद ने निरंतर परमेश्वर की स्तुति और आराधना करते हुए पर्वतों पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। लेकिन एक दिन उसने अपना ध्यान खो दिया। अपनी छत से नीचे देखने पर, जब उसने दूसरे आदमी की पत्नी बतशेबा को उसके अहाते में नहाते हुए देखा तो वह प्रलोभन में पड़ गया। जब हम अपने प्रभु परमेश्वर पर केंद्रित रहते हैं तो कोई भी बुराई हमें छू नहीं सकती, लेकिन जब दाऊद ने अपना ध्यान खो दिया, तो वह प्रलोभन में पड़ गया और पाप किया। 2 शमूएल 11:1–3 ''फिर जिस समय राजा लोग युद्ध करने को निकला करते हैं, उस समय, अर्थात् वर्ष के आरम्भ में दाऊद ने योआब को, और उसके संग अपने सेवकों और समस्त इस्राएलियों को भेजा; और उन्होंने अम्मोनियों का नाश किया, और रब्बा नगर को घेर लिया। परन्तु दाऊद यरूशलेम में रह गया। साँझ के समय दाऊद पलंग पर से उठकर राजभवन की छत पर टहल रहा था, और छत पर से उसको एक स्त्री, जो अति सुन्दर थी, नहाती हुई देख पड़ी। जब दाऊद ने भेजकर उस स्त्री को पुछवाया, तब किसी ने कहा, "क्या यह एलीआम की बेटी, और हित्ती ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा नहीं है?'' यहाँ हम देखते हैं कि कैसे शैतान ने दाऊद को पाप में डाला और उसके

जीवन में बहुत दुःख लाया। राजा दाऊद के लिए बतशेबा से प्यार करना गलत नहीं था, लेकिन जिस गलत तरीके से उसने उसे हासिल किया, उसने उस पर प्रभु के क्रोध को भड़काया। बतशेबा न केवल एक सुंदर महिला थी, बल्कि वह बहुत बुद्धिमान भी थी। उसके माध्यम से सुलैमान की वंशावली आई, जिसे परमेश्वर ने अपना पवित्र मंदिर बनाने के लिए चुना था। 2 शमूएल 11:26–27 ''जब ऊरिय्याह की स्त्री ने सुना कि मेरा पति मर गया, तब वह अपने पति के लिये रोने पीटने लगी। और जब उसके विलाप के दिन बीत गए, तब दाऊद ने उसे बुलवाकर अपने घर में रख लिया, और वह उसकी पत्नी हो गई, और उसके पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु उस काम से जो दाऊद ने किया था यहोवा क्रोधित हुआ।'' दाऊद ने धोखे से बतशेबा के पति, ऊरिय्याह को मार डाला, और उसके शोक की अवधि के बाद, बतशेबा को अपनी पत्नी के रूप में ले लिया। इस बात से परमेश्वर अप्रसन्न हुआ, क्योंकि दाऊद ने बतशेबा को प्राप्त करने के लिए उसके पति ऊरिय्याह को धोखे से मार डाला था। इससे दाऊद पर यहोवा का क्रोध भड़क उठा।

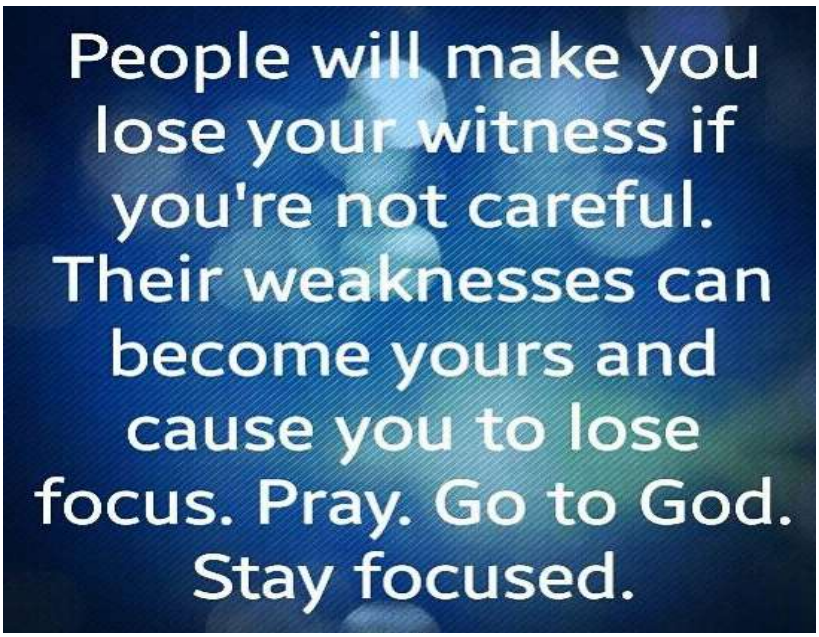

हमेशा उन पर्वतों पर ध्यान केंद्रित करें जहां प्रभु निवास करते हैं। जिस क्षण हम अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे, शैतान हमें पाप में डाल देगा। जब यीशु मसीह ने चालीस दिन और रात उपवास किया, तो शैतान उनके सामने प्रकट हुआ और बार–बार उनका ध्यान अपने पिता परमेश्वर से हटाने की कोशिश करता रहा। हम जानते हैं कि यीशु ने हमेशा ऊपर स्वर्ग की ओर, अपने पिता परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित किया था। हमें शैतान से सावधान रहना चाहिए, क्योंकि वह हमेशा हमारे सामने सांसारिक इच्छाओं को लाने की कोशिश करेगा, और हमें हर प्रलोभन का विरोध करना सीखना चाहिए, क्योंकि एक बार जब हम परमेश्वर पर अपना ध्यान खो देते हैं, तो शैतान हमारा नाश कर सकता है। वह लगातार हमें शारीरिक इच्छाओं, धन की इच्छाओं, या परिवार के लिए – प्रभु के लिए हमारी किसी भी इच्छा के ऊपर परीक्षा देगा। ये सांसारिक इच्छाएँ हमें प्रभु से दूर ले जाती हैं। पहाड़ पर यीशु से शैतान ने क्या कहा? मत्ती 4:3–4 ''तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।" यीशु ने उत्तर दिया : "लिखा है, 'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।'' शैतान ने यीशु से कहा कि वह खुद को साबित करने के लिए पत्थरों को रोटी बनने की आज्ञा दे, लेकिन यीशु

ने उत्तर दिया कि मनुष्य केवल रोटी से नहीं, बल्कि हर उस वचन से जीवित रहेगा जो परमेश्वर के मुख से निकलता है।

वह आदमी याद है जिसे शैतान ने पकड़ा था? एक बार जब वह शैतान से छुड़ाया गया, तो वह यीशु का चेला बनना चाहता था, क्योंकि उसने परमेश्वर के प्रेम को चखा और देखा था। उसने महसूस किया कि जब तक वह यीशु के साथ रहेगा, वह हमेशा अच्छे स्वास्थ्य और स्थिर बुद्धि से आशीषित रहेगा। लूका 8:38–39 ''जिस मनुष्य में से दुष्टात्माएँ निकली थीं वह उससे विनती करने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे, परन्तु यीशु ने उसे विदा करके कहा, "अपने घर को लौट जा और लोगों से बता कि परमेश्वर ने तेरे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।" वह जाकर सारे नगर में प्रचार करने लगा कि यीशु ने मेरे लिये कैसे बड़े–बड़े काम किए।'' यीशु ने उसे अपने शहर में वापस रहने और उसके लिए गवाह बनने के लिए कहा, जिससे और अधिक लोगों को पर्वत की ओर लाया जा सके, जहाँ से हमारी मदद आती है। हमारे लिए भी यही अच्छा है। जब हम प्रभु से जुड़े होते हैं, तो हम प्रभु द्वारा दृढ़ और सुरक्षित होते हैं। जक्कई ने क्या किया जब यीशु उससे मिला? उसने अपने पापों को स्वीकार किया और उनका चेला बनना चाहता था। जब वह अंधा व्यक्ति चंगा हो गया, तो वह भी जहाँ भी यीशु गए, तुरन्त उनके पीछे हो लेना चाहता था।

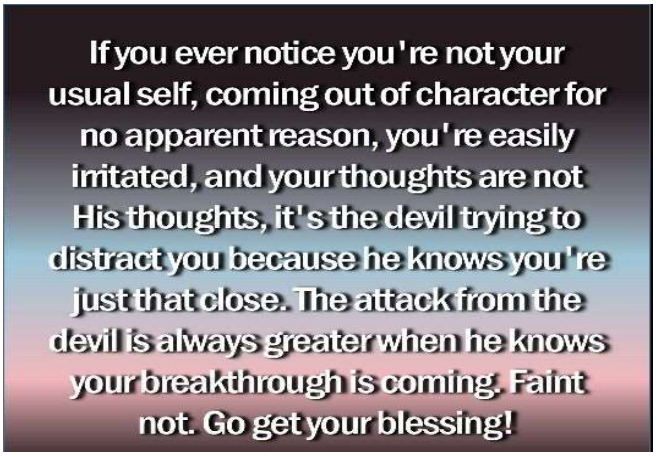

शैतान ने दूसरी बार यीशु से क्या कहा? मत्ती 4:6 ''और उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है : 'वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा, और वे तुझे हाथों–हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पाँवों में पत्थर से ठेस लगे।' '' यहाँ, हम देखते हैं कि कैसे शैतान ने यीशु के ध्यान को नीचे लाने की कोशिश की, जबकि यीशु का ध्यान हमेशा अपने पिता परमेश्वर पर था, जो स्वर्ग में ऊँचा था। शैतान ने यीशु से कहा कि वह अपने आप को नीचे गिरा दे और देखें कि क्या स्वर्गदूत यीशु को उठा लेते हैं, और उसके पैर को पत्थर से चोट नहीं लगने देंगे, जैसा कि लिखा था। शैतान हमेशा हमारा ध्यान परमेश्वर के ऊपर से हटाने की कोशिश करता है, लेकिन यीशु ने एक पल के लिए भी अपना ध्यान अपने पिता परमेश्वर से नहीं हटाया। यहाँ तक कि जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था, तब भी फरीसियों और

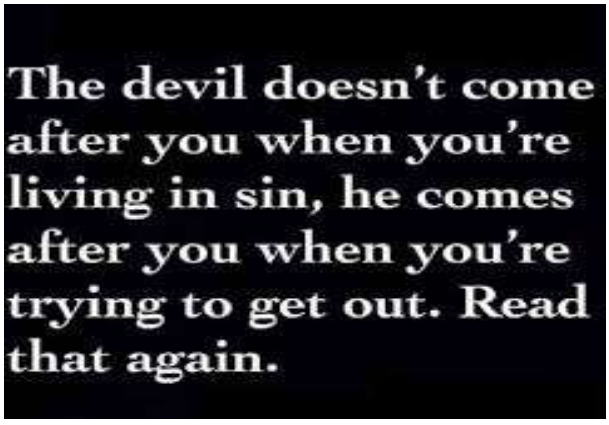

सदूकियों ने उससे हर तरह की बातें कही थीं, लेकिन यीशु का ध्यान अपने पिता परमेश्वर से विचलित नहीं हुआ। मत्ती 27:40 ''और यह कहते थे, "हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आप को तो बचा! यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ।''

फिर से, तीसरी बार, शैतान ने यीशु का ध्यान भटकाने की कोशिश की। मत्ती 4:8–9 ''फिर इब्लीस उसे एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उससे कहा, "यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूँगा।'' शैतान यीशु को ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे दुनिया और उसकी महिमा दिखायी, और यीशु को यह सब देने का वादा किया, अगर केवल यीशु उसे प्रणाम करे। लेकिन यीशु का ध्यान अपने पिता परमेश्वर पर ही रहा।

शैतान हमारे ध्यान को परमेश्वर से हटाने की कोशिश करेगा, लेकिन हमें दृढ़ता से कलवारी के क्रूस और परमेश्वर के पर्वत पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, जहाँ से हमें आशीष और सामर्थ्य मिलती है। कुलुस्सियों 3:1–2 ''अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ,'' शैतान को कभी भी हमारा ध्यान परमेश्वर से हटने का मौका न दें। प्रभु के लिए काम करने में कभी लज्जित न हों, चाहे छोटा हो या बड़ा। शैतान लगातार हमारा ध्यान भटकाने की कोशिश करेगा, लेकिन अगर हमने वास्तव में प्रभु के नाम में बपतिस्मा लिया है, तो हमारा ध्यान हमेशा ऊपर रहेगा, उन पर!

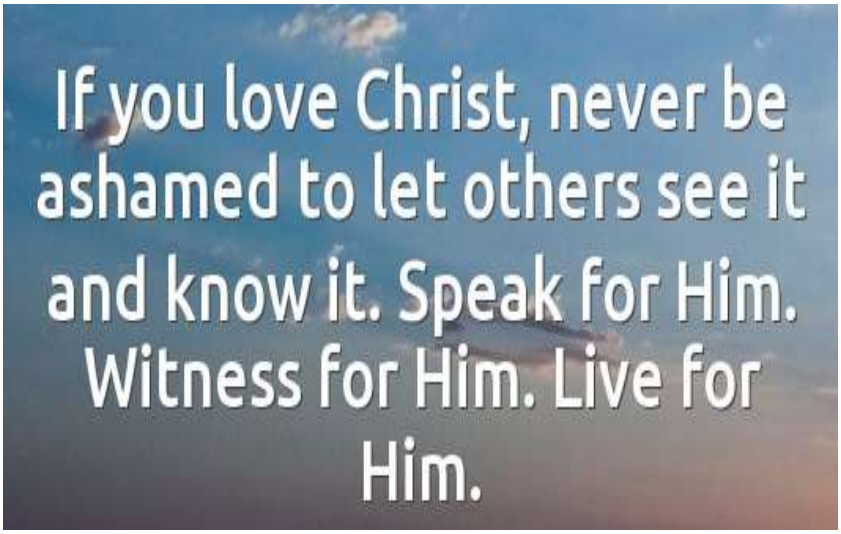

रोमियों 1:15–16 ''अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।'' हमें भी, मसीह के लिए काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उद्धार न पाए हुए लोगों के साथ मसीह के सुसमाचार को साझा करने में कभी भी लज्जित न हों। यदि शिष्य थोमा भारत नहीं आया होता, तो क्या हम यीशु मसीह को जानते? यदि थोमा, जब वह परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए भारत आया था, हमारे साथ जीवन का सुसमाचार साझा करने में यदि शर्मिंदा होता, तो क्या आज हम बच पाते? इसी तरह, हमें परमेश्वर के सुसमाचार और 'वचन की सच्चाई' को उन लोगों के साथ साझा करने में सक्षम होना चाहिए जिन्होंने परमेश्वर के वचन को नहीं सुना है। यही हमारी यीशु की सेवा होगी। प्रभु

के लिए, हमें 'कचरे के डिब्बे' की तरह होना चाहिए, जिस पर आम तौर पर लिखा होता है 'मुझे इस्तेमाल करो।' इसी तरह, यह हमारी इच्छा और हमारा आदर्श वाक्य होना चाहिए कि हम प्रभु के लिए कूड़ेदान हों, ताकि वह हमें अपनी महिमा के लिए इस्तेमाल करे!

प्रकाशितवाक्य 19:14 ''स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है।'' ये स्वर्ग के वे लोग हैं, जो मलमल पहिने हुए, श्वेत और शुद्ध हैं, और श्वेत घोड़ोंपर सवार हैं। हमें प्रभु की अच्छी सेवा करनी चाहिए, प्रभु के लिए कार्य करने में संकोच या लज्जा नहीं करनी चाहिए। तभी हम परमेश्वर के राज्य तक पहुँच सकते हैं। जब हम इस पृथ्वी पर केंद्रित होते हैं, और हम अपने भाइयों को परमेश्वर से अधिक प्यार करते हैं, तो एक दिन प्रभु कहेंगे, *'मैं तुम्हें नहीं जानता।'* शैतान को कभी भी हमारा ध्यान प्रभु या उस पर्वत से न हटाने दें जहाँ से हमें मदद मिलती है। जिस प्रकार यीशु मसीह इस संसार में अपने पिता की इच्छा की सेवा करने और उसे पूरा करने के लिए आए थे, उसी प्रकार हमें भी इस संसार में अपने प्रभु यीशु मसीह की इच्छा पूरी करनी चाहिए।

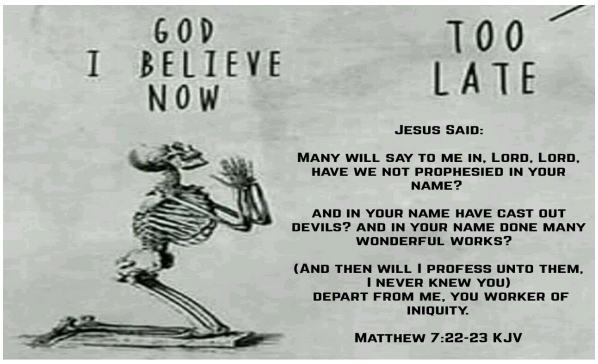

यीशु ने अपने शिष्यों के पैर धोने में संकोच नहीं किया, न ही उन्होंने पापियों या व्यभिचारी स्त्री के साथ भोजन करने में संकोच किया। फरीसी और सदूकी कुड़कुड़ाने लगे कि यदि यीशु परमेश्वर थे, तो उन्हें पता चल जाएगा कि जिन लोगों के साथ यीशु मिल रहे थे वे पापी थे। वे यह नहीं समझ सके कि यीशु पापियों के साथ कैसे घुलमिल गए। दिलचस्प बात यह है कि जबकि यीशु मसीह को पापियों के बीच रहने में कभी शर्म नहीं आई, हम पापियों के पास प्रभु के लिए समय नहीं है!

रोमियों 1:15 ''अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ।'' हमेशा प्रभु के लिए तैयार रहें, उनके राज्य के लिए कोई भी काम करने के लिए तैयार रहें। परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य में अपना घर कमाने के लिए हमने इस पृथ्वी पर अब तक क्या किया है? 2 तीमुथियुस 2:1–4 ''इसलिये हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवन्त हो जा, और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों। मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दुःख उठा। जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फँसाता।'' प्रेरित पौलुस हमें उपदेश देता है कि हम

Jesus is the perfect name!He who put away his fame!And persecuted in shame!That you will never be the same!It's because of you and I He came!Believe him or have yourself to blame!In the book of life, have your name!

प्रभु के अनुग्रह के द्वारा उसके लिए सामर्थी बनें। परमेश्वर की संतान के रूप में हमारे जीवन में, हमें हर दिन लगातार युद्ध लड़ना चाहिए। हमें अपनी सभी लड़ाइयों को परमेश्वर के नियम के अनुसार जीतना चाहिए। इसलिए, हमें परमेश्वर के कानून का पालन करना चाहिए। हमें इस संसार से लड़ते हुए, परमेश्वर की सेना से संबंधित होना चाहिए। जब परमेश्वर आप से पूछेंगे, *'क्या तुम वही हो जो उस सेना का हिस्सा थे जो मेरे लिए लड़ रही थी,'* तो आप क्या कहोगे? क्या हम प्रभु के अच्छे गवाह हो सकते हैं? हम अपने नाम के आगे क्या लिखेंगे? परमेश्वर के राज्य तक पहुँचने के लिए हमने क्या किया? हमारा नाम कहाँ लिखा है, और हम किस सेना में यहोवा के लिये लड़े थे? प्रभु हमें लिखने के लिए कहेंगे कि हमने उनके लिए क्या किया है। हमारे नाम जीवन की पुस्तक में लिखे जाने के लिए परमेश्वर की सेना में लड़ना बहुत महत्वपूर्ण है। हमें इस दुनिया के अंधों की तरह नहीं जीना चाहिए।

Obeying the gospel gets one's name written in the book of life.

- But it can later be blotted out, if one is not faithful.
- After one becomes a Christian one must continue to be faithful **Colossians 1:23; 2 Peter 1:5-11; Revelation 2:10**.
- If they fail to do this, God will blot their names out of His book of life.
- Several scriptures confirm this **Exodus 32:33; Revelation 3:4-5; 2 Peter 1:10-11**.

जीवन की पुस्तक में लिखे कुछ नामों का उल्लेख प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में किया गया है। बाइबिल में ऐसे कई नाम हैं: दाऊद, बतशेबा, रेबेका, इसहाक, यूसुफ, दानिय्येल आदि। बाइबिल में यहोवा के योद्धाओं के कितने नाम दर्ज हैं? क्या हमारे नाम जीवन की इस पुस्तक में कभी दर्ज होंगे? जब तक हमारे नाम इस पुस्तक में नहीं हैं, हम परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते। क्या हमने अपने प्रभु के लिए दुख उठाया और उनके लिए अच्छे कर्म किए हैं? जीवन की पुस्तक उन सभी अद्भुत सेवाओं को दर्ज करती है जो हमने प्रभु के लिए की हैं। हमें भी याद नहीं होगा कि हमने क्या किया है, लेकिन जीवन की पुस्तक में हमारा पूरा रिकॉर्ड है। यदि हमारे नाम जीवन की पुस्तक में मौजूद हैं तो हमें अपना नाम सुनकर खुशी होगी। लेकिन, अगर हमने कोई अच्छा काम नहीं किया है जो दर्ज होने के योग्य है, तो उस दिन हमारी दुर्दशा की कल्पना करें, जब सचाई हमारे सामने नग्न खड़ी होगी।

हमें युद्ध लड़ना चाहिए और यहोवा के लिए योद्धा बनना चाहिए। हमें प्रभु के लिए 'कूड़ेदानं' बनना चाहिए, ताकि प्रभु हमारा उपयोग कर सके। नहीं तो हम मूर्ख व्यक्ति बने रहेंगे। जी हां, इस धरती के लोग सच्चाई को नहीं जानते और बेफिक्र होकर अपनी जिंदगी जीते हैं। स्मरण रखिए, बुलाए हुए बहुत हैं, परन्तु चुने हुए कम हैं। चुने हुए कौन हैं? ये वे हैं जो युद्ध लड़ते हैं और यहोवा के लिए युद्ध जीतते हैं। जो लोग इस संसार में परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं, उन्हें चुना हुआ बनाया जाएगा। हम एक विशेषाधिकार प्राप्त सभा हैं, क्योंकि हमें हर

सप्ताहांत अच्छे संदेश मिलते हैं। लेकिन क्या फायदा अगर हमारा जीवन उनके पापी तरीकों में जारी रहे? प्रभु के लिए 'कूड़ादान' बनो और परमेश्वर को अपना उपयोग करने दो। जब तक हम पृथ्वी पर इसके लिए संघर्ष नहीं करते, तब तक हम महिमा का मुकुट प्राप्त नहीं कर सकते।

हमें उस कार्य पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो यीशु मसीह इस पृथ्वी पर करने के लिए आए थे। इब्रानियों 11:6 ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है।'' हनोक अपने जीवन के 300 वर्षों तक यहोवा के साथ–साथ चलता रहा। उसने परमेश्वर की सेवा की और एक मित्र के रूप में उनके साथ चला। ऐसे विश्वास के बिना हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते। इब्रानियों 12:14 ''सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा।'' हम परमेश्वर के प्रेम को कभी नहीं जान पाएंगे यदि हम उनके लिए 'कूड़ेदान' नहीं बनते। हम अपने भीतर गन्दगी और अशुद्ध गुणों से भरे हुए हैं। जैसे कूड़ेदान में इस धरती की गंदगी होती है, वैसे ही हमें प्रभु से निवेदन करनी चाहिए कि वह हमारा उपयोग करे।

भजन संहिता 42:2 ''जीवते ईश्वर, हाँ परमेश्वर, का मैं प्यासा हूँ, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुँह दिखाऊँगा?'' केवल पर्वत को देखने वाले दर्शक न बनें, बल्कि इन पर्वतों पर चढ़ने का अनुभव भी प्राप्त करें। हमारी इच्छा हमेशा परमेश्वर के राज्य में जल्दी पहुँचने की होनी चाहिए। इस पर्वत पर चढ़ने के लिए हमें चढ़ाई से गुजरना पड़ता है। हम भूखे, प्यासे, थके हुए और यहां तक कि कमजोर महसूस करेंगे, लेकिन हमें पर्वत पर चढ़ना चाहिए और उनका अनुसरण करके परमेश्वर के प्रति अपना प्रेम दिखाना चाहिए। भजन संहिता 15:1–2 ''हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसने पाएगा? वह जो खराई से चलता और धर्म के काम करता है, और हृदय से सच बोलता है;'' दाऊद प्रभु से पूछता है कि कौन उनके मंदिर में रहेगा, और कौन प्रभु के पवित्र पर्वत पर निवास कर सकता है। जब दाऊद ने पाप किया और परमेश्वर के अनुग्रह को खो दिया, तो वह फूट–फूट कर रोया जब उसने महसूस किया कि उसने परमेश्वर को कैसे चोट पहुंचाई है। यह वह समय था जब उन्होंने अपने दिल में सच बोला था। जब दाऊद उस पवित्र पर्वत पर चढ़ा, तो उसने परमेश्वर की शक्ति, प्रेम और सामर्थ्य प्राप्त की। इसलिए उन्होंने यह प्यारा भजन लिखा। इस्त्राएली प्रति वर्ष पवित्र पर्वत पर चढ़ते थे, और चढ़ते समय दाऊद का भजन गाते थे। क्या आप और मैं पर्वत पर चढ़ेंगे? हमें परमेश्वर

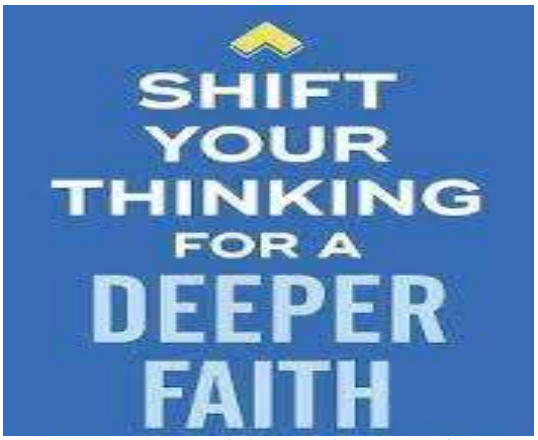

के पवित्र पर्वत पर चढ़ने के लिए उनके प्रति अत्यधिक प्रेम होना चाहिए। हमारे भीतर धर्मी क्या है? हमारे भीतर सत्य क्या है? पवित्र बाइबिल में हमारे पास इन सभी सवालों के जवाब हैं। हमें वचन में और गहरा होना चाहिए।

हम में से प्रत्येक अपने परिवारों के लिए कुछ भी करेंगे, परन्तु हम अपने प्रभु के लिए क्या कर रहे हैं? यहोवा हमारे लिए कभी कुछ कम नहीं करेंगे। हम जितना आशा या माँग कर सकते हैं, वह हमेशा उससे कहीं अधिक करेंगे। परमेश्वर ने नूह को एक बड़ा जहाज बनाने के लिए कहा और उन्होंने नूह को जहाज़ की सारी विशिष्टताएँ बतायीं। इसी तरह, परमेश्वर ने सुलैमान से एक मंदिर बनाने के लिए कहा, और उसे इसके लिए सभी विशिष्टताएँ बताईं। लेकिन आज, आपके और मेरे लिए परमेश्वर की सेवा करने के लिए, उन्होंने हमें कोई विशेष वर्णन नहीं दिया है। इसके बजाय, परमेश्वर ने हमें *'अपना स्थान चौड़ा करने और फैलाने'* के लिए कहा है। यशायाह 54: 2 ''अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर, और तेरे डेरे के पट लम्बे किए जाएँ; हाथ मत रोक, रस्सियों को लम्बी और खूँटों को दृढ़ कर।'' परमेश्वर ने मनुष्य से यह नहीं कहा कि केवल इतना ही बढ़ाओ और अधिक नहीं। यह हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम है, जहाँ उनके प्रेम की कोई सीमा नहीं है।

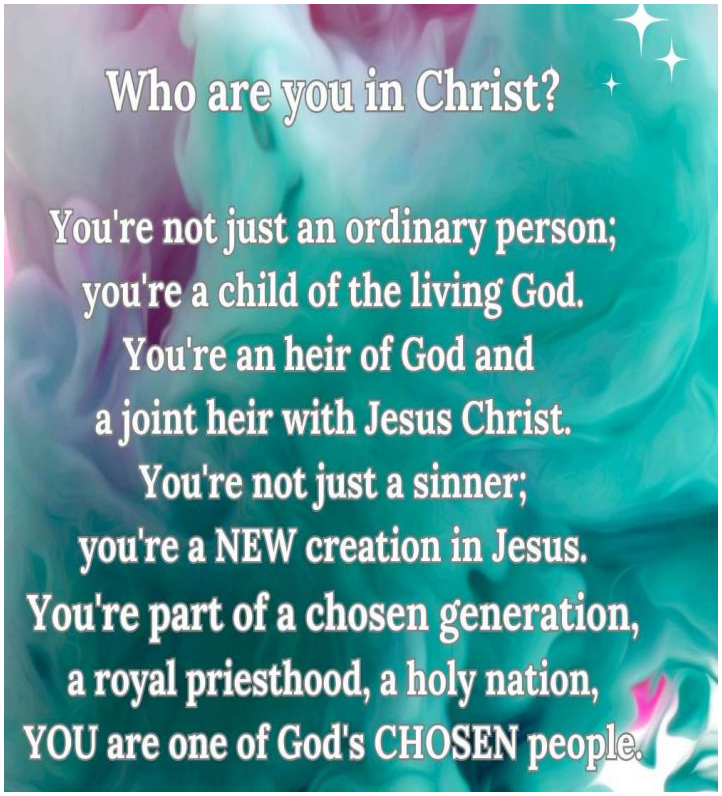

परमेश्वर ने हमें अपने तम्बुओं को बड़ा करने के लिए कोई विशेष वर्णन नहीं दिया है। जब परमेश्वर की कृपा हम पर होती है, और जब हम प्रभु के लिए कूड़ेदान बन जाते हैं और परमेश्वर से हमें उपयोग करने के लिए कहते हैं, तो हम बिना किसी सीमा के बड़े हो सकते हैं! हमारे पास क्या अद्भुत परमेश्वर है। वह हमें अपनी कल्पना से परे जाने के लिए कहते है, उनके लिए हमारी सेवा की कोई सीमा नहीं है। हमारा परमेश्वर एक भला परमेश्वर है, और उन्होंने हमारे लिए बहुत कुछ किया है। वह हमें बिना शर्त प्यार करते है। वह इस धरती पर एक मनुष्य के रूप में पैदा हुए थे, और हमारे लिए वह जिए और मरे। अब वह जी उठे है और हमेशा के लिए जीवित है। एक गाना है जिसे हम गाते हैं, 'मैं मसीह का हूं, हम मसीह के हैं।'

प्रभु के लिए काम करने में कभी लज्जित न हों, क्योंकि हमारे परमेश्वर ने हमारे लिए बहुत कुछ किया है। याद रखें कि अंत समय निकट होने के बारे में पवित्रशास्त्र क्या कहता हैं? क्या हम

सचमुच प्रभु की संतान हैं? या क्या हम केवल प्रभु परमेश्वर के अनुयायी हैं, प्रभु के लिए जो कुछ भी हम चाहते हैं वह कर रहे हैं?

अब, जब आप प्रभु की ओर देखते हैं, तो अपने आप से पूछें – आप प्रभु के लिए क्या कर रहे हैं?

यह वचन आप सभी को आशीष दे,

पास्टर सरोजा म।